मंगलाचरन

नारायन पद बंदिये, ताप तपन होये दूर।
नमों नमों नित चरन को, जो सरब आधार ह ज़ूर॥
हिरदे सिमरो नाम को, नित चरनी करो दण्डौत।
सत शरधा से पूजिये, रख सतगुर की ओट॥
दुबधा मिटे मंगल होये, जो चरन कँवल चित धार।
रिद्ध सिद्ध आवे घर माहीं, पावें जय जयकार॥
साचा ठाकर सरब समराथा, अपरम शकत अपार।
'मंगत' कीजे बन्दना, नित चरनी बलिहार॥466
सत मारग सोझी मिली, तन मन भया निहाल।
गवन मिटी संसार की, सतगुर मिले दयाल॥
बार बार करूँ बन्दना, सतगुर चरनी माईं।
'मंगत' सतगुर भेंट से, फेर गरभ नहीं आईं॥